ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(3): 182-187
www.allresearchjournal.com
Received: 02-12-2023
Accepted: 03-01-2024

Dr. Satish Chandra
Assistant Professor, Siddique Memorial Teacher Training College, Sarmastpur, Muzaffarpur, Bihar, India

Corresponding Author:
Dr. Satish Chandra
Assistant Professor, Siddique Memorial Teacher Training College, Sarmastpur, Muzaffarpur, Bihar, India

राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की भूमिका, एक समीक्षा

Dr. Satish Chandra

सारांश
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शुरू से ही अपने आप को पूरे समाज का एक संगठन मानता रहा है। आजादी के बाद भी संघ की इस भूमिका में कोई अंतर नहीं आया। इसलिए, स्वतंत्रता के बाद 1949 ई. में गठित संघ के संविधान में, यह भी स्पष्ट है कि यदि कोई स्वयंसेवक राजनीति में सक्रिय होना चाहता है, तो वह किसी भी राजनीतिक दल का सदस्य बन सकता है। यह संविधान भारतीय जनसंघ की स्थापना से पहले बनाया गया था। जनसंघ की स्थापना के बाद भी कई स्वयंसेवकों और प्रचारकों को देने के बाद भी इसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। इस विचार से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य अति आवश्यक प्रतीत होता हैं ।

मुख्य शब्दावली : संघ की स्थापना, संघ की भूमिका, संघ के कार्य और परिणाम, निष्कर्ष

प्रस्तावना : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तमाम प्रकार के उतार-चढ़ावों को देखते एवं उसका सामना करते हुए 2025 ई. में अपनी यात्रा के 100 वर्ष पूरे कर लेगा। निरंतर सक्रिय एवं सम्मानजनक रूप से आगे बढ़ते हुए किसी भी संस्था के लिए 100 वर्ष का काल खंड बहुत मायने रखता है। संघ के बारे में विरोधियों द्वारा समय-समय पर चाहे जितना भी दुष्प्रचार किया गया हो किन्तु आम जनता में विरोधियों का दुष्प्रचार सिरे नहीं चढ़ पाता है। उसका कारण निश्चित रूप से जैसा स्वरूप विरोधी जनता में पेश करना चाहते हैं, वैसा बिल्कुल भी नहीं है। यह बात देश की जनता भी बिना किसी लाग-लपेट के मानती है। आजादी के बाद कई बार संघ पर प्रतिबंध भी लगे किन्तु प्रतिबंधों के बावजूद संघ बार-बार उठ खड़ा हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आद्य सरसंघचालक परम पूज्य डाॅ. केशव राव बलिराम हेडगेवार जी अपने जीवन काल में राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए चल रहे सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक क्षेत्रों के सभी समकालीन संगठनों व आंदोलनों से संबद्ध रहे और अनेक महत्वपूर्ण आंदोलनों का नेतृत्व भी किया। आरएसएस की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वह समाज के तकरीबन सभी क्षेत्रों में काम करता है। सभी क्षेत्रों पर संघ की

सक्रिय नजर रहती है। अभी हाल ही में कोरोनाकाल से कुछ राहत मिलने पर 2 वर्ष बाद संघ शिक्षा वर्ग संपन्न हुए। इन शिक्षा वर्गों में 40 वर्ष से कम उम्र के 18,981 व 40 वर्ष से अधिक उम्र के 2, 925 शिक्षार्थियों ने अपनी सहभागिता की। इस वर्ष पूरे देश के प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष के कुल 101 वर्गों में सहभागियों की संख्या 21,906 रही। वर्तमान में यदि शाखाओं की बात की जाये तो कुल संख्या 56,824 है। यदि इन आंकड़ों का विश्लेषण किया जाये तो स्पष्ट होता है कि संघ की तरफ लोगों का आकर्षण और बढ़ा है। निश्चित रूप से यह आकर्षण और अधिक बढ़ता ही जायेगा। अभी हाल ही में खेमी शक्ति मंदिर परिसर में संपन्न हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक के पूर्ण होने पर ये सभी आंकड़े जारी किये गये। कॉलेज, यूनिवर्सिटी की परीक्षा के कारण काफी संख्या में युवा शिविरों में शिरकत नहीं कर सके किन्तु उसके बावजूद संघ के शिक्षा शिविरों में लोगों की जो सहभागिता हुई वह अपने आप में बेहद उल्लेखनीय एवं उत्साहवर्धक है। शिक्षा वर्गों में जिस तरह लोगों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता निभाई है उससे साबित होता है कि संघ की विचारधारा एवं उसका दायरा निरंतर बढ़ता जा रहा है। देश के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री एवं रक्षामंत्री समेत तमाम केन्द्रीय मंत्री, राज्यों के मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक संघ की ही पृष्ठभूमि से हैं।

संघ की एक खासियत यह भी है कि उसकी यदि विपक्षियों द्वारा निंदा की जाती है तो वह बहुत अधिक पब्लिक के बीच अपना पक्ष रखने नहीं जाता है। जब बहुत आवश्यकता होती है तभी अपना पक्ष रखने के लिए संघ सामने आता है। हिन्दुस्तान की राजनीति में सेकुलर दलों द्वारा इस्लामिक चरमपंथी संगठनों के बराबर खड़ा करने की बार-बार कोशिश की गई है किन्तु जनता द्वारा ऐसी तुलना को नकार दिया जाता है। संघ के बड़े से बड़े पदों पर आसीन लोग अपने आप ही पद के बजाय दायित्व का एहसास करते हैं और यही एहसास ही संघ की बहुत बड़ी ताकत है। गौरतलब है कि संघ में किसी भी दायित्व के लिए किसी को कोई नियुक्ति पत्र नहीं दिया जाता है, मात्र घोषणा की जाती है। दायित्व का एहसास होने के कारण देश में जब भी कोई प्राकृतिक आपदा- बाढ़, सूखा, भूकंप, तूफान या और कोई आपदा आती है तो संघ बिना किसी प्रचार एवं ताम-झाम के जनता की सेवा में लग जाता है।

वर्तमान समय में यदि संघ के कार्यक्षेत्र की बात की जाये तो शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहां संघ का काम न हो। जल प्रबंधन, कचरा प्रबंधन, पर्यावरण व स्वच्छता, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक कुरीतियों के निवारण, शिक्षा, उद्योग सहित तकरीबन सभी क्षेत्रों में संघ समाज के सहयोग से कार्य कर रहा है। संघ के सहयोग से भारत निरंतर विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के प्रमुख आदरणीय मोहन भागवत जी का कहना है कि 'हमें विश्व गुरु भारत के निर्माण के लिए साथ मिलकर चलना होगा। हम लोगों को अपने पूर्वजों की ओर से दिये गये उपदेशों पर चलना और स्मरण करना होगा।' इस प्रकार यदि देखा जाये तो निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र निर्माण में संघ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह स्व से निरंतर कर रहा है।

संघ की स्थापना: 27 सितंबर 1925 ई. को विजयदशमी के दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना डॉ. केशव हेडगेवार ने की थी। 50 साल बाद 1950 ई. में आपातकाल घोषित होने पर पहले जनसंघ को संघ के साथ प्रतिबंधित कर दिया गया था। आपातकाल हटा लिए जाने के बाद, जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया और मोरारजी देसाई के नेतृत्व में केंद्र में एक संयुक्त सरकार का गठन हुआ। इस संगठन का राजनीतिक महत्व धीरे - धीरे 1985 ई. से बढ़ता गया और इसका समापन भाजपा जैसी राजनीतिक पार्टी में हुआ, जिसे आमतौर पर संघ की राजनीतिक शाखा के रूप में देखा जाता है। 2000 ई. में, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में, संयुक्त सरकार संघ की स्थापना के 65 साल बाद,

भारत के केंद्रीय प्राधिकरण पर कब्जा करने के लिए आई थी।

उद्देश्य:

1. राष्ट निर्माण में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की भूमिका का अध्ययन करना।
2. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यों का अध्ययन करना।

परिकल्पना:

1. आर एस एस ने भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. राष्ट्र निर्माण के विकास में आर एस एस का बड़ा योगदान रहा है।

आँकड़ो का संग्रहण: प्रस्तुत शोध पत्र में राष्ट् निर्माण में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की भूमिका का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक डेटा का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए जानकारी संघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय, जनसंपर्क, व्यक्तिगत संपर्क, पत्रिकाओं, पुस्तकों और इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त की गई है।

संघ की भूमिका: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 90 साल का हो चुका है। 1925 ई. में दशहरे के दिन, डॉ केशव बलिराम हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की। संघ फाउंडेशन 1925 ई. के बाद 1930 ई. में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के दौरान, डॉ. हेडगेवार, अन्य स्वयंसेवकों के साथ, सत्याग्रह के लिए रवाना होने से पहले अपने सहयोगी डॉ. परांजपे को सरसंघचालक की जिम्मेदारी सौंपकर व्यक्तिगत रूप से सत्याग्रह में शामिल हुए। और इसके लिए उन्हें एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई थी। आजादी के बाद, श्री गुरुजी ने गृह मंत्री सरदार पटेल के संघ को कांग्रेस में विलय करने के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया क्योंकि संघ एक पार्टी नहीं, बल्कि पूरे समाज को संगठित करना चाहता था। राजनीति में एक राष्ट्रीय विचार पार्टी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, संघ को इस रिक्ति को भरना चाहिए, जब डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इसका प्रस्ताव रखा, श्री गुरुजी ने उनसे स्पष्ट कहा कि आप यह काम करते हैं, संघ आपकी मदद करेगा, लेकिन संघ पूरे समाज के संगठन का अपना काम करना जारी रखें। " ईशावास्य उपनिषद" के पाँचवे मंत्र में आत्म तत्व का वर्णन करते समय उपनिषदकार कहते हैं :

"दृतदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके'
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाहयतः

संघ के कुछ उल्लेखनीय कार्य

1. 1962 के युद्ध में योगदान: पूरे देश ने सेना की मदद के लिए देश भर से संघ के स्वयंसेवकों के उत्साह को देखा और सराह, स्वयंसेवकों ने सरकारी काम में और विशेष रूप से जवानों की मदद करने में सैन्य आंदोलन के मार्गों की रक्षा करने, प्रशासन की मदद करने , रसद और आपूर्ति में मदद करने और यहां तक कि शहीदों के परिवारों के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी। जवाहरलाल नेहरू को 26 जनवरी 1963 ई. को परेड में भाग लेने के लिए संघ को आमंत्रित करना था। आज भी परेड को महीनों की तैयारी करनी होती है, लेकिन अभी दो दिन पहले मिले निमंत्रण पर, 3500 स्वयंसेवकों ने वर्दी में भाग लिया। निमंत्रण को आमंत्रित करने के लिए आलोचना किए जाने पर, नेहरू ने कहा - "यह दिखाने के लिए कि केवल लाठी का बल सफलतापूर्वक बम बना सकता है और सफलतापूर्वक चीनी सशस्त्र बलों से लड़ सकता है, विशेष रूप से 1963 ई. में गणतंत्र दिवस की परेड में भाग लेने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए आमंत्रित किया गया। "

2. कश्मीर सीमा विवाद पर कार्य: कश्मीर सीमा पर निगरानी, विभाजन पीड़ितों को आश्रय, अक्टूबर *1947* से संघ के स्वयंसेवकों ने बिना किसी प्रशिक्षण के कश्मीर सीमा पर पाकिस्तानी सेना की गतिविधियों

की लगातार निगरानी की। न तो नेहरू - माउंटबेटन सरकार और न ही हरिसिंह सरकार यह काम कर रही थी। उसी समय, जब पाकिस्तानी सेना की टुकड़ियों ने कश्मीर की सीमा पार करने की कोशिश की, तो सैनिकों के साथ कई स्वयंसेवकों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा करते हुए लड़ाई में अपनी जान दे दी। जब विभाजन के दंगे भड़क गए , जब नेहरू सरकार पूरी तरह से हैरान और परेशान थी, तब संघ ने शरणार्थियों के लिए *3000* से अधिक राहत शिविर स्थापित किए थे, जो पाकिस्तान से अपनी जान बचाने के लिए आए थे।

3.1965 ई. की लड़ाई में योगदान: पाकिस्तान के साथ युद्ध के दौरान, लाल बहादुर शास्त्री ने भी संघ को याद किया। शास्त्री जी ने कानून - व्यवस्था की स्थिति को संभालने और दिल्ली के यातायात नियंत्रण को संभालने में मदद करने का आग्रह किया, ताकि इन कार्यों से मुक्त किए गए पुलिसकर्मियों को सेना की मदद में तैनात किया जा सके। घायल सैनिकों के लिए रक्तदान करने वाले पहले संघ के स्वयंसेवक थे। युद्ध के दौरान, आरएसएस के स्वयंसेवकों द्वारा कश्मीर के हवाई अड्डों से बर्फ हटाने का काम किया गया था।

4.गोवा के विलय में योगदान: भारत के साथ दादरा, नगर हवेली और गोवा के विलय में संघ की निर्णायक भूमिका थी। 21 जुलाई 1954 ई. को दादरा को पुर्तगालियों से आज़ाद करवाया गया, 28 जुलाई को नरोली और फ़िपारिया नामक स्थान को आज़ाद कराया गया और फिर राजधानी सिलवासा को आज़ाद कर दिया गया। 2 अगस्त 1954 ई. की सुबह, संघ के स्वयंसेवकों ने भारत का झंडा उठाया और भारत का तिरंगा फहराया , पूरे दादरा नगर हवेली को पुर्तगाली कब्जे से मुक्त कराया और भारत सरकार को सौंप दिया। संघ के स्वयंसेवक 1955 ई. से गोवा मुक्ति संघर्ष में प्रभावी रूप से शामिल हो गए थे। जब स्थिति बिगड़ी, तो भारत को अंततः हस्तक्षेप करना पड़ा और 1961 ई. में गोवा को आजाद कर दिया गया।

5. आपातकाल में योगदान: 1975 ई. और 1977 ई. के बीच आपातकाल के खिलाफ संघर्ष में संघ की भूमिका की स्मृति और जनता पार्टी का गठन अभी भी कई लोगों के लिए ताजा है। सत्याग्रह में हजारों स्वयंसेवकों की गिरफ्तारी के बाद, संघ कार्यकर्ताओं ने भूमिगत होकर आंदोलन शुरू किया। संघ कार्यकर्ताओं ने सड़कों पर आपातकाल के खिलाफ पोस्टर चिपकाए , जनता को जानकारी दी और जेलों में विभिन्न राजनीतिक कार्यकर्ताओं और नेताओं के बीच संवाद किया। जब लगभग सभी नेता जेलों में बंद थे , तब जनता पार्टी बनाने के लिए सभी दलों के विलय की कोशिशें संघ की मदद से ही हो सकीं।

6. जमींदारी प्रथा का उन्मूलन: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने जमीदारी प्रथा को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सीपीएम को खुद राजस्थान में कहना पड़ा जहाँ बड़ी संख्या में ज़मींदार थे कि भैरों सिंह शेखावत राजस्थान में प्रगतिशील शक्तियों के नेता हैं। संघ के एक स्वयंसेवक, शेखावत, बाद में भारत के उपराष्ट्रपति भी बने। भारतीय विद्यार्थी परिषद , शिक्षा भारती, एकल विद्यालय, स्वदेशी जागरण मंच , विद्या भारती , वनवासी कल्याण आश्रम, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की स्थापना। विद्या भारती में आज 20 हजार से अधिक स्कूल, लगभग दो दर्जन शिक्षक प्रशिक्षण कॉलेज , डेढ़ दर्जन कॉलेज , एवं विश्वविद्यालय और 10 से अधिक रोजगार और प्रशिक्षण संस्थान हैं। केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा मान्यता प्राप्त ये सरस्वती शिशु मंदिर लगभग 30 लाख छात्रों को पढ़ाते हैं और 1 लाख से अधिक शिक्षकों को पढ़ाते हैं। यह संख्या बल से भी अधिक महत्वपूर्ण है कि ये संस्थान भारतीय संस्कारों को शिक्षा से जोड़कर रखते हैं। सेवा भारती अकेले देश भर में दूरदराज और दुर्गम क्षेत्रों में एक लाख से अधिक सेवाएं कर रही है। लगभग 35 हजार एकल विद्यालयों में 10 लाख से अधिक छात्र अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, सेवा भारती ने जम्मू - कश्मीर से

आतंकवाद से अनाथ 57 बच्चों को गोद लिया है, जिनमें 38 मुस्लिम और 19 हिंदू बच्चे शामिल हैं।

7. सेवा कार्य में भूमिका: 1971 ई. में ओडिशा में भयंकर चक्रवात से, भोपाल की गैस त्रासदी से, 1984 ई. के सिख विरोधी दंगों से लेकर गुजरात के भूकंप तक, सूनामी की तबाही, उत्तराखंड में बाढ़ और कारगिल युद्ध में घायलो की संघ ने राहत और बचाव कार्य में सबसे आगे रहा, न केवल भारत में बल्कि नेपाल, श्रीलंका और सुमात्रा में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

परिणाम: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना के कम से कम 7-8 दशक हो गए हैं जब संघ ने सहन किया और आलोचना को सांप्रदायिक हिंदूवादी, फासीवादी और इसी तरह के शब्दों के रूप में कहा। शायद ही दुनिया के किसी संगठन की इतनी आलोचना हुई हो। वह भी बिना किसी आधार के, संघ के खिलाफ हर आरोप आखिर में एक पूरी कल्पना और झूठ साबित हुआ है। वर्तमान समय में यदि संघ के कार्यक्षेत्र की बात की जाये तो शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहां संघ का काम न हो। जल प्रबंधन, कचरा प्रबंधन, पर्यावरण व स्वच्छता, कुटुंब प्रबोधन, सामाजिक कुरीतियों के निवारण, शिक्षा, उद्योग सहित तकरीबन सभी क्षेत्रों में संघ समाज के सहयोग से कार्य कर रहा है। संघ के सहयोग से भारत निरंतर विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के प्रमुख आदरणीय मोहन भागवत जी का कहना है कि 'हमें विश्व गुरु भारत के निर्माण के लिए साथ मिलकर चलना होगा। हम लोगों को अपने पूर्वजों की ओर से दिये गये उपदेशों पर चलना और स्मरण करना होगा।' इस प्रकार यदि देखा जाये तो निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र निर्माण में संघ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह स्व से निरंतर कर रहा है। इसलिए, हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भारत की सामाजिक सेवा गतिविधियों के साथ-साथ राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष:

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शुरू से ही अपने आप को पूरे समाज का एक संगठन मानता रहा है। आजादी के बाद भी संघ की इस भूमिका में कोई अंतर नहीं आया। इसलिए, स्वतंत्रता के बाद *1949* ई. में गठित संघ के संविधान में, यह भी स्पष्ट है कि यदि कोई स्वयंसेवक राजनीति में सक्रिय होना चाहता है, तो वह किसी भी राजनीतिक दल का सदस्य बन सकता है। यह संविधान भारतीय जनसंघ की स्थापना से पहले बनाया गया था। संघ के पूरे समाज का संगठन होने के नाते, यह भी स्वाभाविक है कि समाज का कोई भी क्षेत्र संघ से अछूता नहीं रहेगा और स्वयंसेवक समाज जीवन के हर क्षेत्र में अपनी राष्ट्रीय दृष्टि रखेगा। ऐसी स्थिति में, क्योंकि कुछ स्वयंसेवक राजनीति में सक्रिय हैं, यह कहना अनुचित और गलत होगा की राजनीतिक दल समाज के केवल एक हिस्से का प्रतिनिधित्व करते हैं और समाज के दूसरे हिस्से का भी। इसलिए संघ राजनीति करता है, या यह एक राजनीतिक पार्टी है। इस विचार से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य अति आवश्यक प्रतीत होता हैं।

संदर्भ

1. रतन शारदा, 2020, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: परत दर परत, ब्लूम्सबरी, दिल्ली, पृष्ठ *328*
2. यशस्वी भारत, 2021, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 264-265
3. सुनील आंबेकर, 2019, दी आरएसएस रोडमैप्स फॉर 21st सेंचुरी, रूपा प्रकाशन, दिल्ली, 144-145
4. बलदेव भाई शर्मा, हमारे सुदर्शन जी, 2017, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ *1-536*
5. श्याम बहादुर वर्मा, हमारे हेडगेवार जी, 2107, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 1- 232
6. एन. एच. पालकर, डॉ हेडगेवार, 2000, भारतीय विचार साधना, पुणे, पृष्ठ 136
7. संदीप देव, हमारे गुरूजी, 2017, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 1-312

8. रामबहादुर राय, राजीव गुप्ता, हमारे बालासाहब देवरस, 2019, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 1-456
9. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा वर्ष 2021 की रिपोर्ट के अनुसार ,
10. प्रीति गांधी (15 मई 2014), " राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघः कैसे दुनिया के सबसे बड़े एनजीओ ने भारतीय लोकतंत्र का चेहरा बदल दिया है ", डीएनए इंडिया, 2014-12-01.